मन - सभी अनुभवों का केन्द्र

स्वामी भूमानन्द तीर्थ

प्रभात रश्मिः

29 मई 2011

हरिः ओम् तत् सत्, जय गुरु!

इस दुनिया में जीवन-मुक्त के बहुर्विध क्रिया-कलापों पर शंकर की रचना की मैं विवेचना कर रहा था। कभी वह बच्चों, कम उम्र के लोगों, बूढ़े लोगों की संगति में रह सकता है। कभी वह पर्वतीय वातावरण में, कभी नदी के किनारे, कभी बहुमंजली इमारतों में, कभी अमीर लोगों के बीच, कभी ग़रीब लोगों के बीच, कभी अत्यंत तार्किक विवेचना में, कभी शांत, कभी ध्यान में डूबे, कभी धूमधाम से पूजा करते हुए, अलग अलग स्तुतियां गाते हुए, कभी शैवों, वैष्णवों, सौरों, गाणेशों के संगति में, शंकर बहुत सारी विभिन्नताओं का वर्णन करते हैं। मैं आपको यह बताना चाहता हूं, संदेश यह है, "ज्ञान आपको एकांतिक या अलग थलग नहीं बनाता है। सच्चा ज्ञान आपको लचीला बनाएगा और बिना किसी विरोध के किसी भी स्थिति में रहने योग्य बनाएगा।"

सभी स्थितियां दुनिया से संबंधित है और दुनिया का ही भाग है। यह आपके परिवार में हो सकता है, समाज में, बाज़ार में, सड़क पर, व्यापारिक कार्यालय में, प्रशासन की कुर्सी या कहीं भी, ये सभी दुनिया की स्थितियां हैं और दुनिया की सभी स्थितियों का सामना एक समान और लचीलेपन से करनी चाहिए। जो भी आए या जाए, मन को स्वीकार करने दें! तब आपका मन लचीला होगा, एक समायोजित करने वाला मन – सबकुछ आपकी त्वचा या त्वचा की सतह से दूर होगा। कुछ भी आपके मन में प्रवेश नहीं करेगा।

© नारायणाश्रम तपोवनम, 2013

जब 'एम' ने मुझे कहा, स्वामीजी, "क्या इस ढंग से जीना लोगों के लिए संभव है?" देखिये, कुछ बदलाव हो सकता है। सामाजिक या आर्थिक स्थितियों के अनुसार कुछ बदलाव होगा। लेकिन बनावट, आंतरिक बनावट और तथ्य ये कभी नहीं बदलेंगे। पता नहीं, मैंने आपको कहा या नहीं - "मेरे मन पर तीन प्रभाव पड़े हैं। एक राम का, दूसरा कृष्ण का और तीसरा शंकर का। मेरा पूरा जीवन ही राम, कृष्ण और शंकर की प्रतिछाया और विकिरण है।"

मुझमें त्याग के प्रति आकर्षण था। केवल तापसिक त्याग ही नहीं! राम ने राज्य और अर्धांगिनी का त्याग किया - "यदि राम कर सकते हैं तो मैं भी करूंगा"। और यह अस्वीकार, त्याग और अस्वीकार, इसका बहुत ही ज़्यादा प्रेरणात्मक मूल्य मेरे लिए रहा।

जब मैंने शंकर को पढ़ा, मैं शंकर की बुद्धिमत्ता से इतना ज़्यादा प्रभावित नहीं था बल्कि उनकी जो प्रेरणा थी, उससे प्रभावित था। प्रेरणा के बिना आध्यात्मिक ज्ञान के सभी वक्तव्य और रहस्योद्घाटन बहुत अधिक प्रासंगिक नहीं रह जाते हैं। जैसा कि मैं प्रायः कहता हूं, किसी भी मूल्य की अच्छी तरह से की गई व्याख्या एक भावनात्मक उत्प्रेरणा और एक बौद्धिक बाध्यता उत्पन्न करती है। बाध्यता इसलिए क्योंकि यह सही है, इसे ठुकराया नहीं जा सकता। भावनात्मक उत्प्रेरणा - यह इतनी प्रेरणात्मक है कि सभी को इसके लिए तैयार रहना चाहिए। यह अलग बात है कि हम इसके लिए तैयार नहीं होते और कोशिश भी नहीं करते। एक मनुष्य होने के नाते हम इस स्तर तक उठने के लिए ही बने हैं।

यह ऐसे ही है, दस किलोग्राम लोहा या इस्पात रखने की जगह दस किलोग्राम सोना रखना। कौन इसे पसंद नहीं करेगा? इसी तरह आध्यात्मिक ज्ञान सोना है और भौतिक ज्ञान शायद इस्पात। बस यही! ढलुआ लोहा!

इसके बावज़ूद मैं चकित हूं, शंकर गोविंदपाद से मिलने केरल से गुजरात, नर्मदा नदी के किनारे, तक पैदल चलते हुए गये। "क्या मैं किसी गोविंदपाद जैसे व्यक्ति से मिल पाऊंगा?" जब मैं कलकत्ता गया तो 2 महीने के अन्दर मेरे भाई मेरे गुरुदेव को हमारे फ़्लैट में लेकर आए। मैंने इस तरह के किसी व्यक्ति से मिलने की कभी उम्मीद नहीं की थी- वह

कृशकाय दिख रहे थे। जब वे मेरे घर पर आए थे तो उन्होंने एक कमीज़ पहन रखी थी; लेकिन दूसरी ओर वह बहुत ही अस्थीपंजर जैसे थे, दाढ़ी और बाल के साथ! वह तपस्वी जैसे दिख रहे थे, जैसे प्राचीन काल में हों, लेकिन जब उन्होंने अंगरेजी में बोलना शुरु किया तो मैंने पाया कि वह सिर्फ़ तपस्वी ही नहीं थे, वह आधुनिक भी थे। फिर मैं और भी चकित हुआ जब विवेकानन्द की किताबों को पढ़ा। इसके पहले मैं शंकर, जो 1200 साल पूर्व हुए, के बारे में सोच रहा था। मैं उनके बाद हुआ। पूरा देश ही बदल चुका है। हमारे यहां आधुनिक ब्रिटिश शासन था, इसके बाद हम स्वतंत्र हो गये। जवाहर लाल नेहरु बहुत इच्छुक थे कि भारत को एक लोक-हितकारी राष्ट्र बनाएं जैसे युरोप के कुछ राज्य हैं। "इन दिनों, क्या तपस्वी जीवन, तापसिक जीवन का कोई स्थान है?" मैं आश्चर्य कर रहा था! मेरे आकर्षण के बावजूद मैं इस पर बहुत ही तर्क-संगत तरीके से सोचना चाहता था।

उसी समय मुझे विवेकानन्द की जीवनी, उनके पूर्वी और पश्चिमी शिष्यों के द्वारा लिखी हुई, को पढ़ने का अवसर मिला। तब मैंने समझा। कुछ ही साल पहले विवेकानन्द ने भ्रमण करना शुरु किया और उनके बहुत सारे अनुभवों का वर्णन उसमे था।

मैं किसी भी काम को कट्टर तरीके से नहीं करता, मैं यात्रा करने का आदी नहीं हूं। आप जानते हैं, मैं आश्रम के बाहर संध्या भ्रमण के लिए भी निकलना पसंद नहीं करता। मैं आश्रम के अन्दर ही घूमना चाहता हूं। मैं पहले जाता था लेकिन मैं इससे बचना चाहूंगा। यदि मुझ पर छोड़ा जाए तो मैं किसी को भी या सभी लोगों को मिलना नहीं चाहता हूं। जो लोग मुझसे मिलना पसंद करते हैं, जिनसे मैं भी मिलना पसंद करता हूं, यदि वे आते हैं, बहुत अच्छा! अन्यथा, मैं जहां हूं वहीं रहना चाहता हूं। मैं नहीं जानता कि आप इसे तपस् कहेंगे या नहीं। मैं बाहर जाता हूं, अलग अलग स्थानों पर ठहरता हूं। हमारे अपने केन्द्र हैं। मैं इसे एक उद्देश्य से करता हूं। लेकिन मैं वापस आना चाहता हूं और अपने स्वाभाविक तरीके से रहना चाहता हूं। अपने बाथरूम में साधारण स्नान, जब भी आवश्यक हो शौचालय जाना, अन्दर अपने सादे शयन-कक्ष में जाना, मैं बहुत स्वतंत्र महसूस करता हूं।

जब से मैं यहां आया हूं मैंने कोई सामाजिक संबंध नहीं रखे हैं सिवाय सत्य के साधकों से संपर्क करने का, जो यहां आते हैं। मेरे प्यारे बच्चों, आपको जानना चाहिए कि यह स्वामीजी बहुत बहुत खुश हैं। वह बहुत खुश हैं, बिना किसी कारण के! मैं नहीं जानता, कुछ अच्छाई है, आप इसे कुछ शुद्धता कह सकते हैं, शुद्धता नहीं तो कम से कम निर्दोषिता!

विवेकानन्द की किताबों को पढ़कर मैं बहुत खुश हुआ। मेरे आकर्षण को एक दूसरे स्तर की समझ और समर्थन मिल गया। त्याग के कदम उठाने का निर्णय लेने में अधिक समय नहीं लगा। मैं चला आया और घूमना भी शुरु कर दिया। लेकिन मेरे परिव्राजन जीवन ने एक अनोखा मोड़ लिया। बिना किसी उद्देश्य और गंतव्य के घूमने की जगह लोग मुझे प्रवचन देने के लिए बुलाने लगे। तो यह एक प्रसार की यात्रा हो गई न कि एक एकांतिक यात्रा। आज भी एकांतिक रूप से घूमने में मेरी कोई रुचि नहीं है। मैंने पाया कि परिस्थितियों को मुझे बनाना नहीं है - परिस्थितियां खुद ही आएंगी। मुझे कुछ भी बनाने की कोशिश नहीं करनी है, या ऐसा ही कुछ! जो भी आता है, जहां भी मैं रहता हूं, यहां तक कि नारायणाश्रम तपोवनम में भी। यात्रा की आवश्यकता आएगी और दरवाजे पर दस्तक देगी। लोग मुझे यात्रा करने को कहते हैं। मां कहती है, "इतनी ज़्यादा यात्रा न करें"। इसलिए मैंने उनलोगों को कहना शुरु कर दिया है, उन्हें कुछ कुछ बहाना देकर। किसी दिन वे चाहते हैं कि मैं 11 बजे या 11.30 बजे यहां से बच्चों को भाषण देने के लिए जाऊं और कुछ पारितोषक बाटूं या ऐसा ही कुछ! मैं नहीं जाने की सोचता हूं। यह भी एक यात्रा है। यह आवश्यक नहीं है कि मैं अकेला जाऊं। बावज़ूद जब मैं अकेला गया तो भी लोगों ने मुझे घेर लिया और मुझे बोलना पड़ा। वे लोग मुझे पसंद करते थे।

अतः मेरा जीवन परमहंस परिव्राजक का रहा है जिसका अर्थ है - यात्रा। यही हमारी जीवन-शैली है। मेरे प्यारे 'एम', मेरे छोटे बच्चे, किसी प्रकार की शंका मत करो। आप स्वयं पर संदेह कर सकते हैं लेकिन ज्ञान और इसकी उत्कृष्टता पर संदेह न करें। यह एक बड़ी कमी या यहां तक कि पाप होगा, इन महान चीज़ों पर संदेह करना। यह हमारी संस्कृति का मेरुदण्ड है। आप इसे सराहें, आप इसका पालन नहीं कर सकेंगे, मैं ऐसी अपेक्षा भी नहीं करता लेकिन कभी संदेह न करें। यह सब लोगों के द्वारा लिखा अभिलेख है। मैं नहीं समझता कि आपके परपिता ने ऐसे संदेश अभिलेख के रूप में रख छोड़ें हैं। यहां पर एक परपिता जिसे शंकर कहें या ऐसे ही लोग, जिन्होंने जो भी महसूस किया और समझा, उसका अभिलेख बना दिया। और वे कह रहे हैं, "यह आपके मन के अन्दर डूबने की और मन को शुद्ध बनाने का प्रश्न है। बल से नहीं बल्कि प्यार से। वीरता या बहादुरी से नहीं बल्कि नम्रता के द्वारा। जीतने के भाव से नहीं बल्कि एक अपनापन के भाव,

तारतम्यता के द्वारा। इसे पसंद करें, यह आपका हो जाएगा, इसे चाहें, यह आपके पास आएगा और आपको आप्लावित कर देगा।"

यह और कुछ नहीं बल्कि परा-भौतिक पदार्थ, जिसे मन कहा जाता है, की महानता और भव्यता है। यह मन है जिसने आपके शरीर को गढ़ा है 'एम'। आपकी आंखों को आकार मिला है, किसी बाहरी वस्तु से नहीं, दुनिया, हवा, पृथ्वी या ऐसी ही कोई चीज़! आपकी आंखें बनी है, उससे जिसे आप मन कहते हैं - आपकी नाक, आपकी जीभ, आपका मस्तिष्क, आपके शरीर का प्रत्येक कोषाणु! भोजन पचता है मन के कारण। एक मृत शरीर भोजन खा या पचा नहीं सकता। यह जीवन है जो शरीर को खाने या पचाने के योग्य बनाता है। विभिन्न प्रकार के पदार्थ आपके पेट में डाले जाते हैं। 'एम' क्या आप उन खाद्य पदार्थों में जो आप लेते हैं खून का लेश मात्र भी पाते हैं? मेरा मतलब शाकाहारी भोजन से है। मांसाहारी भोजन में भी खून का दौरा नहीं है सिर्फ़ मांस है। लेकिन सभी खाद्य पदार्थ 4 या 5 घंटे में समायोजित कर लिए जाते हैं और आप पाते हैं खून बन गया है।

मेरे प्यारे बच्चे, इस तरह का बदलाव पदार्थ नहीं ला सकते हैं। यह एक बदलाव है जहां आप पाते हैं कि निष्क्रिय और मृत पदार्थ जीवित खून में बदल जाता है। इससे बड़ा रहस्य और क्या आप चाहते हैं? और क्या बड़ा चमत्कार आप चाहते हैं? प्रतिदिन यह हो रहा है। पूरा खाना पच जाता है और जैविक रक्त में बदल जाता है। और इसे कौन करता है, यह पदार्थ के द्वारा नहीं, भौतिक विज्ञान के द्वारा नहीं, रसायन विज्ञान के द्वारा नहीं, यह मुख्य रूप से चेतना के द्वारा, चे त ना - और मन चेतना की एक अभिव्यक्ति है।

यह चमत्कार या जादू है जिसे मन करता है और पूरा आध्यात्म विज्ञान मन के अन्दर जाने का है- इसे और कुछ नहीं, तो साधारण निर्दोष, शुद्ध, नम्र बनाने का है। बस इतना ही!

पानी नीचे की ओर बहता है। यदि आप नम्र हो जाएंगे तो पूर्ण ब्रह्माण्डीय भव्यता आपके सर की ओर बहेगी, जैसे पानी। किसीको नम्र बनने से कौन रोकता है? किसी को घमंडी बनने के लिए बहुत कुछ की आवश्यकता होती है क्योंकि आपके

पास शिक्षा, धन, पद, यह और वह, होनी चाहिए। लेकिन नम्र बनने के लिए हमें कुछ नहीं चाहिए! मैं समझता हूं ये सब मानव मन की उत्कृष्टता है, मानव बुद्धि की सहायता से और हमेशा ही अनिवार्य आत्मा के द्वारा कृपा प्राप्त और निर्वाह किया हुआ।

हरिः ओम् तत्सत् , जय गुरु!

* * *

Narayanashrama Tapovanam
Venginissery, P.O. Ammadam, Trichur, Kerala – 680563, India
Email: ashram1@gmail.com; Website: http://www.swamibhoomanandatirtha.org